पांडुलिपि विज्ञान एवं लिपिविज्ञान डिप्लोमा पाठ्यक्रम

अध्ययन केन्द्र : वैदिक संशोधन मण्डल, पुणे (VSM-Pune)

विश्वविद्यालय : केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

2024-25

लघु परियोजना कार्य

प्रदत्तकार्य – 05 अप्रकाशित हस्तलेखों से सम्बद्ध सूचनाएं

नाम – शरद चंद्र

नामाङ्कन संख्या - PD/24-25/1018

लघु परियोजना कार्य

05 अप्रकाशित हस्तलेखों से सम्बद्ध सूचनाओं सहित लघु शोध पत्र

05 अप्रकाशित हस्तलेखों के नाम -

1. चिन्तामणिविजयचम्पूः (शिवानन्दयति प्रणीत)
2. रामायणतात्पर्यसंग्रहदीपिका (वेङ्कटाचार्यः चक्रवर्ती प्रणीत)
3. सत्यभामापरिणयचम्पू (कृष्णकविकृतम् रचित)
4. कादम्बरी टीका (श्रीअच्युतराय मोडक रचित)
5. अद्भूततरङ्गम् (हरिजीवनमिश्र विरचित)

1.चिन्तामणिविजयचम्पूः

रचनाकार- शिवानन्दयति

सूचना – TRIENNIAL CATALOGUE OF MSS

R. NO – 7197 TO 7199 ONE VOLUME

पत्र – हस्तनिर्मितपत्र

आयतन – 11*9-1/2 इन्च

फोलियो -227

लाइन -20 एक पृष्ठ में

लिपि – देवनागरी

भाषा - संस्कृत

स्थिति – परिष्कृत सुन्दर,

विषय – एक चम्पू काव्य है। महादेव का वर्णन है गद्यों ओर पद्यों में। इसमें गोकर्ण ओर जावालि के कथा भी है।

आदि में –

चिन्तामणिचम्पूः।

शिवानन्दयतिविरचिता॥

कैलासाचलमृषणं कमलभूवैकुण्ठरुद्रार्चितं
गोकर्णेशामुपास्महे शशिकलाचूढं शरण्यं सताम्।
मायश्शोवविभूतिमेव रसना स्तोतुं मदीया भवेत्
प्रभ्वी राजतशैलनाथ भगवत् भूयो नमस्ते नमः॥

नीते कलौ कुमतिभिः कतिभिर्मनुष्यैः
होमार्चनाजपसमाधिविलीनां यः।
भूमिं हिताय जगतामवतीर्य शम्भु
अप्पय्यदीक्षित इति प्रतिमाति सूरिः॥
नमस्तस्मै शिवज्ञाननिधयेऽप्पषसूरये।
वाचं वितर विद्वन्मे नितान्तं मन्दबुद्धये॥
पुष्पिका में है –
इत श्रीमद्भारद्वाजगोत्रदुग्धाब्धिसन्तानशास्विनः
शैवागमसंप्रदायकप्रवृत्तस्य निसर्गदयासागरस्य भगवतः
अप्पयमास्विनःकृपाप्रवाहेण विरचिते चिन्तामणिविजयनाम्नि
चम्पूकाव्ये प्रथम मञ्जरी।

2. रामायणतात्पर्यसंग्रहदीपिका

रचनाकार- वेङ्कटाचार्यः (चक्रवर्ती)

सूचना – TRIENNIAL CATALOGUE OF MSS 1931-32

R. NO – 5574

पत्र – हस्तनिर्मितपत्र

आयतन – 11*9-1/2 इन्च

फोलियो -36

लाइन -20 एक पृष्ठ में

लिपि – देवनागरी

भाषा - संस्कृत

स्थिति – परिष्कृत सुन्दर,

ग्रन्थप्रकृति - असम्पूर्ण

विषय – वाल्मीकिप्रणीत श्रीमद्रामायण की टीका है।

3. सत्यभामापरिणयम्

रचनाकार- कृष्णकविकृतम्

सूचना – transcribed in 1916-17 from a M.S of M.B by N.B Ramanujaehariyar of Navalplkkam, North Aroot district.

पत्र – हस्तनिर्मितपत्र

आयतन – 10*9-1/2 इन्च

फोलियो -36

लाइन -20 एक पृष्ठ में

लिपि – देवनागरी

भाषा - संस्कृत

स्थिति – परिष्कृत सुन्दर,

विषय – एक नाटक है। श्रीकृष्णजी का विवाह वर्णन है सत्यभामा जी की साथ अभिनय के माध्यम से। । पञ्चमाङ्कों के नाटक है।

आदि में है –

लक्ष्मीमंङ्कुरयत्सौ शशिकला चूढावचूडायिता

शंभोर्या प्रथमानविश्रममममृतः प्रोद्दामघोषश्रियः।

वव्रे सर्वसुरासुरस्य मिषतः स्पर्धावतः कोमला
रूढैश्वर्यमनन्यतुल्यममृतोन्माथोत्सवे शंकरम्॥
द्राक्षा वीक्षाप्रतीक्षा कृदय
सरसताभिक्षुरिक्षुश्च साक्षात्
नीचा मोचापि वाचां
मधुरिमधुरि सा पादचूलिर्मधूलिः।
पीयूषं यूषवेषं वहति
नवपयो जोवमास्ते स एष
ध्वन्यध्वन्यध्वनीनो भुवि
जयतितरां कृष्णनामा कवीन्द्रः॥
आकाशे पुनः कर्णं दत्वा किं नामधेयं तद्रूपकं किं वा तत्र इतिवृत्तमिति।
आर्याः सत्यभामापरिणयं नाम भागवती कथा च।
अन्त में –
तथापीदमस्तु भरतवाक्यम् –
सुरपतिमिवर्षेत्विष्टकाले प्रजानां
क्षितिरपचितसस्या स्वस्ति गोब्राह्मणेभ्यः।
चरतु नरपतिश्च न्यायमार्गो बुधानां
मतिरपि कविता यस्सारमाशीरुपेता॥
इति परिक्रम्य निष्क्रान्ताः सर्वे।
पुष्पिका में है –
श्रीतिरुमानूरीत्युपनामकमंगमापुरवास्तव्येन श्रीकृष्णनामकवीन्द्रेण
विरचिते सत्यभामापरिणये पञ्चमोऽङ्कः॥

4. कादम्बरी टीका

रचनाकार- श्रीअच्युतराय मोडक

सूचनाए - अच्युतराय मोडक द्वारा रचित कादंबरी टीका की हस्तलिखित पांडुलिपि आज भी सुरक्षित है। यह पांडुलिपि गुजरात राज्य के वड़ोदरा (बड़ौदा) नगर स्थित प्राच्य शोध संस्थान (Oriental Research Institute) में रखी हुई है।

इस पांडुलिपि की कुछ विशेष जानकारियाँ निम्नलिखित हैं:

पांडुलिपि का स्थान: वड़ोदरा प्राच्य शोध संस्थान

अभिगमन संख्या (Accession Number): 8245

पत्र – हस्तनिर्मितपत्र

आयतन – 11*9-1/2 इन्च

फोलियो -103

लाइन -20 एक पृष्ठ में

लिपि – देवनागरी

भाषा - संस्कृत

स्थिति – परिष्कृत सुन्दर,

ग्रन्थप्रकृति - सम्पूर्ण

विषय – बाणभट्टद्वारा प्रणीत कादम्बरी गद्य काव्य का टीका है।

टीकाकार (व्याख्याकार) का परिचय –

कादंबरी जैसे जटिल और रसयुक्त ग्रंथ को समझने के लिए विद्वानों द्वारा लिखी गई टीकाएँ (व्याख्याएँ) अत्यंत उपयोगी होती हैं। ऐसी ही एक प्रसिद्ध टीका लिखी थी – अच्युतराय मोडक ने।

अच्युतराय मोडक संस्कृत के एक महान विद्वान थे। उनका जीवनकाल लगभग 1778 ई. से 1833 ई. तक माना जाता है। वे वर्तमान महाराष्ट्र राज्य के रत्नागिरी ज़िले के निवासी थे। उनके पिता का नाम नारायण शास्त्री और माता का नाम अन्नपूर्णा देवी था। संस्कृत साहित्य में उनका परिवार एक प्रतिष्ठित स्थान रखता था।

अभैदिकधिकृति नामक एक ग्रंथ के पृष्ठ 109 पर अच्युतराय के परिवार की प्रशंसा में निम्नलिखित श्लोक अंकित है:

श्रीमन्नारायणाख्यौ गुरुरिव जनको यस्य विख्यातकीर्तिः।
मात्राऽऽ यस्यान्नपूर्णा अनुपमगुणवती शास्त्रविद्यैव साद्ध्वी॥

इसका अर्थ है: उनके पिता नारायण शास्त्री, जो विद्वता में अपने युग में प्रसिद्ध और गुरु के समान थे।
उनकी माता अन्नपूर्णा देवी, जो शास्त्रों की ज्ञाता और गुणों में अद्वितीय थीं।

यस्य श्रीमान्पितृव्यः समजनि परमाचार्य वद्रामचन्द्रः।
कावेरी यस्य धात्री परमहितकरी ब्रह्मविद्योपमा सीत्॥

इसका अर्थ है:
उनके चाचा वद्रामचंद्र महान आचार्य थे और उनकी धाय (पालनकर्ता) कावेरी एक अत्यंत कल्याणकारी स्त्री थीं, जो ब्रह्मविद्या के समान थीं।

अच्युतराय मोडक ने संस्कृत साहित्य में कई महत्त्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की, जिनमें दर्शन (दार्शनिक विचार), काव्यशास्त्र (काव्य की सिद्धियाँ और सिद्धांत), तथा अनेक प्रकार की टीकाएँ सम्मिलित हैं। उनकी कुछ रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं जबकि कुछ अब भी अप्रकाशित हैं, परंतु पांडुलिपियों के रूप में विद्यमान हैं।

इस टीका की पांडुलिपि एक अमूल्य साहित्यिक धरोहर है, क्योंकि यह हमें न केवल कादंबरी जैसे जटिल गद्यकाव्य को समझने में मदद करती है, बल्कि अच्युतराय जैसे विद्वान के दृष्टिकोण से इस रचना को देखने का अवसर भी देती है।

5. अद्भूततरङ्गम्

रचनाकार- हरिजीवनमिश्र

सूचनायें - इस प्रहसन की एक हस्तलिखित पांडुलिपि (हाथ से लिखी गई प्रति) प्राप्त हुई है, जो पश्चिम बंगाल के प्रसिद्ध धार्मिक स्थल नवद्वीप में स्थित "गौरांगधाम पुरातत्व परिषद" नामक संस्थान में संरक्षित है।

पत्र – हस्तनिर्मितपत्र

आयतन – 20*6-1/2 इन्च

फोलियो -35

लाइन -8 एक पृष्ठ में

लिपि – मध्यकालीन बंगाली लिपि

भाषा - संस्कृत

स्थिति – परिष्कृत सुन्दर,

ग्रन्थप्रकृति - सम्पूर्ण

विषय – जिस प्रहसन (नाटक) की यहाँ चर्चा की जा रही है, उसका नाम "अद्भुततरंगम्" है। यह एक ऐसा नाटक है जिसमें मुख्य रूप से हास्य रस की प्रधानता है, अर्थात् यह लोगों को हँसी और मनोरंजन प्रदान करने के उद्देश्य से लिखा गया है।

इस नाटक की शुभ शुरुआत दो श्लोकों के माध्यम से की गई है। प्रहसन की शुरुआत "ॐ नमो भवान्यै"(देवी भवानी को नमन) इस वाक्य से होती है और समाप्ति "श्रीगौर्यै नमः" (देवी गौरी को नमस्कार) वाक्य से की गई है। इससे यह स्पष्ट होता है कि यह नाटक देवी पार्वती को समर्पित भाव से लिखा गया है।

इस प्रहसन की संरचना तीन सर्गों (अंकों) में की गई है, इसलिए इसे "त्रिसर्गबद्ध प्रहसन" कहा गया है, यानी यह तीन भागों में विभाजित एक नाट्यरचना है।

कवि का परिचय: इस हास्य नाटक के लेखक हैं – श्री हरिजीवन मिश्र । उनके पिता का नाम श्री नाल मिश्र था और उनके पितामह (दादा)का नाम श्री वैद्यनाथ मिश्र था, जो एक महान और बहुशास्त्रों के ज्ञाता विद्वान थे।

इस नाटक के प्रारंभ में नट (मुख्य पात्र) द्वारा बोले गए वाक्यों से यह जानकारी मिलती है कि यह नाटक राजा रामसिंह की आज्ञा से लिखा गया था। लेखक ने राजा के आदेश का पालन करते हुए यह रचना की।

राजा रामसिंह के बारे में कुछ और विवरण भी मिलता है:

उनके पिता का नाम था राजाधिराज जयसिंह, और पितामह (दादा) का नाम था नरसिंह। इससे यह स्पष्ट होता है कि यह रचना एक शाही दरबार के संरक्षण में तैयार की गई थी।

इसके अतिरिक्त इंटरनेट माध्यम से यह जानकारी भी प्राप्त हुई है कि इस प्रहसन की एक और पांडुलिपि मध्यप्रदेश के सिंधिया प्राच्य शोध संस्थान में भी उपलब्ध है।